मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF OPT-23 **HL-2305**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): भानु प्रताप सिंह

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ ✓ | नहीं |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5-Aug-2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	2	1	3	1	8	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 148½

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
पाठ्यक्रम पर पकड़ अच्छी है।
लेखन-शैली अच्छी है
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा का क्षेत्र विस्तृत और वैविध्य से युक्त है। जिसे निम्न प्रकार समझे सकते हैं।

हिंदी भाषा का प्रथम क्षेत्र वह है जहाँ हिंदी मातृभाषा और राजभाषा सहित पठन, पाठन में प्रयुक्त होती है। भारत के दस राज्य इस श्रेणी में आते हैं यथा हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचलप्रदेश उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, और छत्तीसगढ़ और बिहार

हिन्दी भाषा का दूसरा क्षेत्र वह है जहाँ हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। यह शिक्षा के साथ यहाँ सम्पर्क भाषा का कार्य भी करती है। ऐसे क्षेत्रों में गुजरात, महाराष्ट्र, प. बंगाल, ओडिशा आदि राज्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आते हैं।

भारत के दक्षिणी राज्यों और पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी मुख्यत: सम्पर्क भाषा के रूप प्रयुक्त होती है। यह यहाँ के स्कूलों में त्रिभाषा सूत्र के अनुसार पढ़ाई भी जाती है।

हिन्दी का क्षेत्र उन देशों तक भी विस्तारित है। जहाँ व्यापक भारतीय समाज उपस्थित है इसमें त्रिनिदाद, टोबैगो तथा मॉरीशस आदि देश आते हैं।

पुन: हिन्दी विश्व के 120 से अधिक देशों में पढ़ाई भी जाती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

देवनागरी लिपि के मानकीकरण में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का अविस्मरणीय योगदान है। नागरी के संबंध में सभा ने निम्न सुझाव दिए।

1. नागरी के अधिकांश वर्ण खड़ी पाई युक्त है लेकिन जो खड़ी पाई युक्त नहीं हैं जैसे ('द', ट र आदि) उन्हें भी खड़ी पायी युक्त बनाना चाहिए।

2. प्रत्येक वर्ण के दो भाग हों पहला स्वर रहित व्यंजन का द्योतक हो और दूसरा स्वरयुक्त व्यंजन का उदाहरणार्थ

प् (स्वर रहित व्यंजन) 'प' स्वरयुक्त व्यंजन
प

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. प्रत्येक स्वर वर्ण 'उ' से प्रारम्भ हो कि आवश्यकतानुसार अन्य स्वरों की मात्राएँ उसमें प्रयुक्त की जाएँ जैसे -

इ - उी ऐ → ओ आदि।

विदित हो काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रस्ताव विद्वानों और शिक्षा मंत्रालय ने मान्य नहीं किए।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत् योगदान है। उन्होंने अपने कठोर अनुशासन और नेतृत्व गुण से हिंदी भाषा के मानकीकरण का आंदोलन ही खड़ा कर दिया। उनका हिंदी भाषा की मानकता के संबंध में निम्न वैचारिक योगदान था -

1. परसर्ग को संज्ञा से पृथक लिखना चाहिए जैसे - राम 'ने' जबकि सर्वनामों में परसर्ग को सटाकर लिखना चाहिए जैसे - तुमने, हमने

2. कुछ शब्द जो संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं जैसे - प्राण, होश, आँख आदि हिन्दी में पुल्लिंग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रूप में प्रचलित हो गये हैं इन्हें ऐसे ही स्वीकार कर लेना चाहिए।

3. हिन्दी में प्रचलित अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं के विदेशज शब्द स्वीकार कर लिए जाने चाहिए।

4. संज्ञा के 'देवरे', 'राजे' आदि प्रयोग अमानक हैं।

5. सर्वनामों में इस्ने, उस्ने, इन्ने इत्यादि शब्द अमानक हैं इनकी जगह मानक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

6/10 Good

समग्रत: आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के ही आशीर्वाद से कामताप्रसाद गुरु ने हिंदी का व्याकरण लिख अमानकता को मुकाम तक पहुंचाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा और बोली में अंतर भाषावैज्ञानिक कम समाजभाषावैज्ञानिक अधिक है। इसमें निम्न अंतर खोजे जा सकते हैं।

1. बोली सामान्यत: आमजन के द्वारा प्रयुक्त होती है जबकि भाषा आमजन के साथ राजभाषा, व्यापार आदि में भी प्रयुक्त हो सकती है।

2. सामान्यत: बोली का मानक व्याकरण नहीं होता जबकि भाषा का होता है।

3. भाषा का क्षेत्रीय और प्रयोगिक विस्तार सामान्यत: बोली से ज्यादा ही होता है।

4. भाषा की साहित्यिक परंपरा होती है। जबकि बोली में यह हो सकती है, नहीं भी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. भाषा को प्रायः शास्त्रीय मान्यता प्राप्त होती है। बोली को नहीं होती।

6. भाषा बोली की तुलना में 'अधिक मानक होती है जबकि बोली नहीं'।

समग्रतः बोली ही सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक प्रभाव पाकर भाषा के रूप में विकसित हो जाती है।

6/10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणी' बोली

शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न

हरियाणी पश्चिमी हिन्दी उपवर्ग की प्रमुख बोली है इसका प्रयोग क्षेत्र हरियाणा के करनाल, गुरुग्राम इत्यादि क्षेत्रों के आस पास होता है।

हरियाणी की भाषिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं:-

1. हरियाणी में 'न' का 'ण' के रूप में प्रयोग होता है - पानी → पाणी।

2. 'आ' का 'ऊँ' तथा औ का 'ओ' हो जाता है। उदाहरणार्थ - जाता हूं → जाऊँ हूँ
औरत → ओरत

3. हरियाणी में अल्पप्राणीकरण ~~की~~ प्रवृत्ति मिलती है।
मुख → मुहँ

4. कहीं कहीं द्वित्वीकृत व्यंजन प्रयुक्त होते हैं, यथा - चल्लया, लाग्गे आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. 'म्हारा', 'थारा' आदि जैसे सार्वनामिक प्रयोग मिलते हैं।

6. वर्तमान के लिए 'हूँ', 'हैं', 'तें' तथा भूतकाल के लिए 'था' रूप मिलता है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

अपभ्रंश का अर्थ है भ्रष्ट-भाषा। अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी अवस्था है। इसका काल 5-10 सदी का है। अपभ्रंश के अध्ययन के स्रोतों में सिद्ध-नाथ रचनाएँ, जैन साधुओं का धार्मिक साहित्य यथा हेमचन्द्र का 'सिद्ध हेम शब्दानुशासन' आदि है।

अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

1. संज्ञा और कारक व्यवस्था :

अपभ्रंश में संस्कृत के सविभक्तिक प्रयोगों का सरलीकरण होने लगा तथा सभी प्रातिपदिक 'स्वरांत' होने लगे। निर्विभक्तिक प्रयोग बढ़ने के साथ ही जो सविभक्तिक प्रयोग थे उनमें भी

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सरलीकरण होना प्रारंभ हुआ जैसे 'हिं' विभक्ति करते 'कर्ता', 'करण', 'सम्प्रदान' इत्यादि कारकीय परसर्गों का काम चलाया जाने लगा।

डा. नामवर सिंह ने ~~अपभ्रंश की~~ अपनी पुस्तक 'हिन्दी के अपभ्रंश का योगदान' में स्वतन्त्र परसर्गों का विकास को अपभ्रंश की सर्वाधिक क्रांतिकारी विशेषता माना है। जो हिन्दी के विकास का आधार बनी।

③ सर्वनाम: सर्वनामों में कुछ विशेष परिवर्तन नहीं हुए अधिकांश सर्वनाम संस्कृत की परंपरा के चलते रहे पर 'मइ' 'उन्ह' 'तुम्ह, तुहार, महार' इत्यादि जैसे प्रमुख सर्वनामों का विकास हुआ।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. लिंग व वचन संरचना: अपभ्रंश में संस्कृत के तीन के स्थान पर दो ही लिंग बचे। नपुंसक लिंग प्रायः पुल्लिंग में पर्यवसित हो गया। इसी प्रकार वचन भी दो ही बचे यथा एकवचन और बहुवचन।

4. विशेषण: अपभ्रंश के विशेषणों में विशेष परिवर्तन नहीं आये। विशेषणों पर प्रायः संस्कृत परंपरा का प्रभाव बना रहा पर विशेष प्रवृत्ति संख्यावाचक विशेषणों के विकास की है। जैसे- दस, बीस, सत्त, अट्ठ आदि।

5. क्रिया संरचना: अपभ्रंश की क्रिया संरचना संस्कृत की कृदंत परंपरा की बनी रही हालांकि ~~कुछ~~ 'उरउ'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

'ढोल' जैसे नए धातु रूपों का विकास हुआ।
अपभ्रंश का एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

"एउ जिम्मु नग्गउ गिउ, भग्गिरि खग्ग न भग्गु
तिक्खा तुरीय न माणिया, गोरी गले न लग्गु"

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास का अविस्मरणीय योगदान है।
1916 में मात्र बीस वर्ष की आयु में जबलपुर में 'शारदा भवन पुस्तकालय' की स्थापना कर उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा आरम्भ की। उन्होंने 'शारदा', 'लोकमत' तथा 'जयहिन्द' जैसे पत्रों के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में मजबूत आन्दोलन चलाया।
उन्होंने 1927 में केन्द्रीय विधायिका में हिन्दी का प्रश्न उठाया इससे पहले हिन्दी का प्रश्न केन्द्रीय और राज्य विधानसभाओं में कभी उठाया ही नहीं गया था।
जनमन में हिंदी के प्रचार-प्रसार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

के साथ ही उन्होंने प्रशासन और न्यायालयों में हिन्दी प्रवेश का पक्ष लिया। उन्हीं के प्रयासों से हिन्दी को राजभाषा के रूप संवैधानिक स्थिति मिली।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास जी का महत्त्व इसलिए भी है कि संसद में हिन्दी के पक्ष में मतदान करने के लिए उन्होंने अपने दल के व्हिप की विशेष अनुमति ली।

सत्तर के दशक में दक्षिण में उत्पन्न हिंदी विरोधी आंदोलन के शमन में सेठ जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

समग्रतः सेठ गोविन्ददास जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगाया जिस कारण देश उनका

आभारी रहेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

हिन्दी में केवल दो ही लिंग हैं यथा स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। इसमें संस्कृत की तरह न तो 'नपुंसक' लिंग है और न ही अंग्रेजी के तरह 'उभयलिंग'। इसलिए हिन्दी में लिंग-निर्धारण एक चुनौती बन जाता है।

हिन्दी की लिंग-संरचना का विकास विद्वानों के चिंतन की जगह लोक प्रयोगों से हुआ है। इसलिए इसमें जटिलताएँ विद्यमान हैं। जो निम्न प्रकार है।

(1) पहली समस्या प्राकृतिक और मानव निर्मित वस्तुओं के संबंध में आती है। जैसे हिन्दी में आकाश, समुद्र, पहाड़ जंगलों को पुल्लिंग माना गया है तो नदियों, पक्षियों आदि को स्त्रीलिंग।

इसी प्रकार टमाटर, आलू पुल्लिंग है

तो गोभी, भिण्डी स्त्रीलिंग।

वस्त्र को स्त्रीलिंग मान लिया गया है तो वहीं ट्रक को पुल्लिंग।

(2) दूसरी समस्या 'पद' संबंधी कुछ शब्दों में आती है जिनकी मूल संरचना ही पुल्लिंग है। जिनका स्त्रीलिंग जटिल और हास्यास्पद हो जाएगा। जैसे- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, डाक्टर, मास्टर आदि।

(3) तीसरी समस्या लोक प्रचलित शब्दों में आती है। ऐसे शब्द जब मानक भाषा में आते हैं तो उनका लिंग निर्धारण कठिन हो जाता है।

(4) अंतिम समस्या विदेशज शब्दों की है जब ये हिन्दी से जुड़ते हैं तो इनका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंग निर्धारण कठिन हो जाता है। जैसे - डाक्टर साइन्टिस्ट आदि।

समग्रत! यद्यपि हिन्दी की संख्या लिंग संरचना थोड़ी जटिल है। पर मानकता की सघनता में वृद्धि के साथ-साथ इसमें सरलता और मानकता आती जाएगी।

9/15

दृष्टि The Vision

3. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहने के औचित्य पर विचार कीजिये। 20

देवनागरी लिपि दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक मानी जाती है इसकी वैज्ञानिकता के निम्न कारण है।

1. देवनागरी की वर्णमाला अत्यंत वैज्ञानिक है। इसमें पहले स्वर आते हैं और बाद में व्यंजन। अंग्रेजी आदि में स्वरों, व्यंजनों का कोई स्थान व्यवस्थित नहीं है।

2. इसी तरह देवनागरी वर्णमाला में मुँह के एक भाग से उच्चारित व्यंजन एक वर्ग में आते हैं। जैसे 'कंठ' से उच्चारित सभी व्यंजन एक जगह है। यथा -

'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'ङ'

3. देवनागरी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number, in this space)

वैज्ञानिक विशेषता है इसके लिखित और उच्चारित रूप में कोई भेद न होना। अंग्रेजी आदि में यह व्यवस्था अत्यंत भ्रामक है। जैसे हिन्दी में 'उ' ध्वनि के लिए हमेशा 'उ' ही लिखा जाता है। जबकि अंग्रेजी में कभी (U) तो कभी (OO)

4. देवनागरी की शिरोरेखा इसके प्रत्येक वर्ण की स्वतन्त्र उपस्थिति का द्योतक होती है। उदाहरणार्थ "मैं खाना खा रहा हूँ" में सभी शब्द व्यवस्थित हैं यदि शिरोरेखा ~~रेखा~~ के ना हो तो "मैंखा नाखा रहाहूं" होने का खतरा बना रहेगा।

5. देवनागरी की मात्रा व्यवस्था भी इसे वैज्ञानिक ~~ब~~ लिपि बनाती है। जैसे यदि

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number, in this space)

हमें 'अमेरिका' लिखना हो तो 'ए' की जगह 'े' मात्रा ~~प्रयुक्त~~ प्रयुक्त होती है जिससे उच्चारण प्रवाह बाधित नहीं होता अन्यथा अमेरिका को "अमएरइकआ" लिखना पड़ता।

देवनागरी की कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं जो इसे एक वैज्ञानिक लिपि बनाती हैं- जैसे-

(1) देवनागरी को सीखना बेहद आसान है केवल 'ा', 'ु' तथा (-) सीखने से ही अधिकांश अच्छर लिखे जा सकते हैं। अक्षर

(2) देवनागरी में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण है और एक वर्ण से एक ही ध्वनि संकेतित होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

⑧ देवनागरी की व्यंजन संयोग व्यवस्था इसके लेखन को सरल बनाती है यथा - ज्ञ, 'त्र' आदि।

समग्रतः देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के नामकरण तथा नाम के स्रोत पर विद्वानों में मतभेद मिलता है।

कुछ विद्वान नाम 'देव' से प्रभावित बताते हैं तो कुछ 'नागरी' से।

'देव' शब्द से व्याख्या करने वाले विद्वान इसे 'देववाणी संस्कृत' को लिखने के लिए विकसित लिपि से बताते हैं और कुछ इसमें 'देव' या 'धर्म' संबंधी साहित्य के प्रणयन को देवनागरी नामकरण का आधार बताते हैं।

'नागरी' शब्द को आधार बनाकर व्याख्या करने वाले विद्वान इसे शहरों में अर्थात नगरों में विकसित होने के कारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

देवनागरी नाम पड़ने से जोड़ते हैं। तो कुछ गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा विकसित मानते है।

कुछ विद्वान मानते हैं कि देवनागरी का विकास पटना में हुआ चूंकि चन्द्रगुप्त मौर्य की उपाधि 'देव' थी। अतः इसी से प्रभावित होकर लिपि का नाम देवनागरी पड़ा।

समग्रतः इस बात की संभावना अधिक है कि देवनागरी का विकास 'नगर' में सुशिक्षित विद्वानों के हाथों हुआ और देववाणी संस्कृत के लेखन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

सूफी काव्यधारा में अवधी का प्रथम प्रयोग 'मुल्ला दाउद' की 'लोरिकहा' एवं 'चंदायन' में हुआ जिसने एक झटके में अवधी को लोकभाषा से उठाकर काव्य-भाषा बना दिया। चंदायन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"दाउद कवि जो चांदा गाई
जेई रे सुना सो गा मुरझाई"

इसी में आगे कुतुबन की 'मृगावती' उल्लेखनीय रचना है। सूफी काव्यधारा में मलिक मुहम्मद जायसी सर्वाधिक प्रमुख कवि हैं जिन्होंने अवधी की लोकभाषा की मिठास को सम्पूर्णता में अपनी रचनाओं में व्यक्त किया। व उनकी 'पद्मावत' में अवधी ठेठ रूप में प्रयुक्त हुयी है जो लोक संस्कृति के 'दंगरा' सहचर मीठ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www...

के साथ ही '(हिय फटा)' और 'सूची अँगूरी न निकसै छिउ'' जैसी लोकोक्तियों और मुहावरों से भाषा को सम्पन्न किया। इसीलिए आचार्य शुक्ल को भी कहना पड़ा कि '' अवधी की मिठास के लिए पद्मावत का नाम बराबर लिया जाएगा''

इसी धारा में नूर मुहम्मद की 'अनुराग बाँसुरी' तथा उस्मान की चित्रावली आदि रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

सूफी काव्य में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियाँ निम्न प्रकार हैं।

1. 'व' का 'ब', 'श' का 'स' तथा 'ड़' का 'र' व, 'क्ष' का 'छ' के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे - वर्षा - बरसा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

2. अपभ्रंश के 'पुहुमी', 'निहचय' जैसे शब्द मिल जाते हैं।

3. क्षतिपूरक दीर्घीकरण मिलता है

चित्त > चीत

4. अवधी के सामान्य सर्वनामों यथा मइ, मैं, हम, तुम्ह, तुम्हार के अतिरिक्त 'हौं' जैसे सर्वनाम मिलते हैं - जैसे - ''हौं रानी तुम जोगि भिखारी''

5. बहुवचन बनाने के लिए 'न्ह', 'न्हि', अन जैसे प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, यथा -

''रतन हुआ जिन्ह हाथन्ह लेहीं''

6. 'हि' विभक्ति का प्रयोग विभिन्न कारकों में होता है जैसे - ''राजा, रवहिं बोले नाहिं''

7. क्रिया संरचना में वर्तमान के लिए 'त' रूप तथा भूतकाल के लिए 'ब' रूप और भविष्य काल में 'ह' तथा 'ग' रूप मिल जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

साहित्यिक अवधी का विकास और प्रयोग हमें आदिकालीन साहित्य से मिलने प्रारंभ हो जाते हैं। इसका विकास भक्तिकालीन सूफीकाव्यधारा और रामकाव्यधारा में चरम रूप में हुआ। अपने विकास की प्रक्रिया में साहित्यिक अवधी निम्न सीमाओं से ग्रसित हो गयी।

1. अवधी में निहित औदात्य, गंभीरता और मर्यादा जैसे भाव इसे ब्रजभाषा की तरह कोमल, चंचल और श्रृंगारिक अभिव्यक्ति देने में अक्षम बनाते हैं।

2. अवधी आधुनिक जीवन की जटिल और परिवर्तनशील प्रवृत्तियों को धारण करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

में सक्षम नहीं है। इसीलिए आधुनिक काल में खड़ी बोली ने अवधी को अपदस्थ कर प्रमुख भाषा का दर्जा पा लिया।

3. मुक्तक रचनाओं के लिए जो 'शाब्दिक तराश' 'प्रवाह' और भावगत चांचल्य चाहिए वह अवधी में नहीं है इसलिए प्राय: अवधी में मुक्तक रचनाओं की कमी दिखती है।

4. जिस प्रकार ब्रजभाषा सम्पूर्ण हिन्दी जगत की काव्यभाषा बन गयी वह कार्य अवधी नहीं कर सकी।

कतिपय सीमाओं के बावजूद अवधी अत्यंत समृद्ध और सक्षम भाषा है। इसने रामचरितमानस जैसा महाकाव्य संसार को दिया है।

6/10 GM

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया किंतु देवनागरी अंकों को वह स्थान नहीं दिया गया। अनु० 343 में लिखा गया - "भारत की राजभाषा हिन्दी होगी और उसकी लिपि होगी देवनागरी। देवनागरी अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रयुक्त किया जाएगा"

इस प्रकार देवनागरी लिपि और राजभाषा हिन्दी से देवनागरी अंकों को अलग कर दिया गया।

संविधान के प्रारम्भ होने के बाद 15 वर्षों पश्चात जिस प्रकार हिन्दी को एकमात्र राजभाषा बनना था। उसी तरह देवनागरी अंकों का प्रयोग भी होना था। किंतु गैर-हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी विरोधी आंदोलन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के चलते हिन्दी का राजभाषा बनना जटिल कार्य हो गया।

इसी आधार पर 'राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन' जी ने संसद में बार-बार देवनागरी अंकों का प्रश्न उठाया किंतु राजभाषा अधिनियम 1963 और संशोधन 1967 में देवनागरी अंकों की कोई चर्चा ही नहीं थी। इस प्रकार देवनागरी अंक राजभाषा हिन्दी से पृथक होकर नेपथ्य में चले गये।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

19 सदी में खड़ी बोली हिन्दी का तीव्र विकास हुआ। जिसमें विभिन्न कारणों के साथ सर्वाधिक प्रमुख कारण था प्रेस का विकास।

'उदन्त मार्तण्ड' को प्रथम अखबार था जिसे कोलकाता से प्रकाशित किया गया। प्रेस की सहजता के लिए हिन्दी के फॉण्ट ढलाई का काम शुरू हुआ। आगे राजा राममोहन राय और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी ने अपनी पुस्तकों, पत्रों को हिन्दी में प्रकाशित किया।

'राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द और राजा लक्ष्मण सिंह' ने अपने पत्रों के माध्यम से हिन्दी के क्रमशः दो रूपों को बढ़ावा दिया यथा फारसीनिष्ठ हिन्दुस्तानी भाषा और संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली। राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द का फारसी शब्दों को 'नुक्ता' लगाकर लिखने का योगदान अविस्मरणीय है। जैसे- क़ ज़ ग़ आदि।

19 वी सदी में हिन्दी के विकास में भारतेन्दु मण्डल का अभूतपूर्ण योगदान था। भारतेन्दु के पत्र पत्रिकाएँ यथा 'बाला-बोधिनी', 'कविवचनसुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' ने हिन्दी को नया आयाम दिया इसी आधार पर भारतेन्दु ने कहा हिंदी नए चाल में ढली 1873 में

प्रतापनारायणमिश्र ने 'ब्राह्मण' पत्र तथा बालकृष्ण भट्ट जी ने अपने पत्र से हिंदी के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया।

Gi[?] 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बिहार के मुज्जफरपुर निवासी अयोध्या-प्रसाद खत्री जी का 'खड़ी बोली आन्दोलन' में महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुजफ्फरपुर

भारतेन्दु युग तक खड़ी बोली 'गद्य' की भाषा के तौर पर स्थापित हो चुकी थी किंतु 'पद्य' की भाषा के रूप में अभी ब्रजभाषा ही प्रयुक्त की जा रही थी। स्वयं भारतेन्दु ने खड़ी बोली में कविता न हो पाने की शिकायत की।

ऐसे भाषायि ऊहापोह के संक्रमण काल खत्री जी ने खड़ी बोली में पद्य का पक्ष लेते हुए आन्दोलन चलाया। उन्होंने अपनी रचनाओं यथा 'खड़ी बोली का पद्य'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

'मौलवीस्टाइल की हिन्दी' आदि में खड़ी बोली का पक्ष लिया।

उनके समकालीन रचनाकार यथा प्रतापनारायण मिश्र आदि ने ब्रजभाषा का पक्ष लिया। इस संबंध हिन्दोस्तान पत्र में 6 माह तक विवाद चलता रहा।

समग्रत: अपने और खड़ी बोली के विरुद्ध एक विरोध झेलते हुए खत्री जी ने खड़ीबोली पद्य का जो आन्दोलन खड़ा किया उसे आगे महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने मुकाम तक पहुँचाया। इस प्रकार उनका खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

G.A 6

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

संविधान के अनु० 343 में लिखा है- "भारत की राजभाषा हिन्दी होगी और लिपि देवनागरी होगी"। स्वतन्त्रता के ~~समय~~ 15 वर्ष पश्चात हिन्दी को एकमात्र राजभाषा बनना था किंतु इससे पूर्व में ही गैर हिन्दी ~~सम्म~~ भाषी राज्यों विशेषतः तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में हिन्दी विरोधी आंदोलन होने लगे। इन राज्यों की चिंता दूर करने हेतु राजभाषा अधिनियम 1963 लाया गया जिसमें निम्न प्रावधान थे।

1. हिन्दी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग यथावत चलता रहेगा।

2. उच्च न्यायालय अपना कामकाज हिन्दी या राजस्तरीय भाषा या अंग्रेजी में कर सकेंगे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. संघ के संकल्प, आदेश, विधेयक, पत्र इत्यादि अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में होंगे।

4. जब तक गैर- हिन्दी भाषी राज्य अंग्रेजी को समाप्त करने का संकल्प नहीं लेंगे तब तक अंग्रेजी का प्रयोग चलता रहेगा।

समग्रतः राजभाषा अधिनियम 1963 में ऐसे प्रावधान कर दिए गये जिससे हिन्दी कभी भी भारत की एकमात्र राजभाषा न बन सके।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

देवनागरी के मानकीकरण के प्रयास हमें दो स्तरों यथा व्यक्तिगत और संस्थागत स्तरों पर मिलते हैं।

वैयक्तिक प्रयास:

1. तिलक ने सर्वप्रथम देवनागरी के मानकीकरण का प्रयास आरम्भ किया। उन्होंने अपने पत्र 'हिन्दी केसरी' के लिए तिलक फॉण्ट तैयार किया।

2. डा. गोरखनाथ ने मात्राओं को वर्णों से अलग कर लिखने का सुझाव दिया जैसे -
दीपा → दी पा

3. सावरकर बंधुओं ने 'अ' की बारहखड़ी के प्रयोग का सुझाव दिया जिसका प्रयोग महात्मा गांधी ने 'हरिजन सेवक' पत्र में किया।

4. डा. श्यामसुन्दर दास जी ने अनुस्वार के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रयोग से भाषा को सरल बनाने का सुझाव दिया
उदाहरणार्थ - गंङ्गा → गंगा।

संस्थागत प्रयास:

1. काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने महत्वपूर्ण प्रयास किए। सभा ने डा. गोरखनाथ के सुझावों को नकार दिया।

2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा स्थापित 'लिपि सुधार परिषद' (महात्मा गांधी की अध्यक्षता में), ने निम्न सुझाव दिए -
   ① 'अ' की बारहखड़ी स्वीकारी जाए।
   ② 'ख', 'भ' इत्यादि में गुजराती घुण्डी लगाना।
   ③ शिरोरेखा का प्रचलन समाप्त करना।

3. 'आचार्य नरेन्द्र देव' की अध्यक्षता में स्थापित उ०प्र० सरकार की समिति तथा शिक्षा मंत्रालय का विशेष महत्व रहा। आचार्य नरेन्द्र की

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अयस्क्षता में स्थापित समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अधिकांश सिफारिशों को नकार दिया। जैसे शिरोरेखा का प्रचलन बना रहना चाहिए और 'अ' की बारह खड़ी आदि।

शिक्षा मंत्रालय ने मानकता संबंधी विशिष्ट प्रयास किए जैसे 'मानक देवनागरी वर्णमाला' तथा 'हिन्दी वर्तनी मानकीकरण' आदि।

समग्रत: विभिन्न वैयक्तिक प्रयासों और संस्थागत प्रयासों से देवनागरी के मानक रूप को विकसित और प्रचलित किया गया।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

व्यावसायिक शिक्षा में हम 'कौशल विकास' से लेकर 'मार्केट इकॉनमी' तक के विस्तार को लेते हैं। यहाँ हिन्दी की स्थिति संतोषजनक नहीं रही है। अंग्रेजी के प्रयोग और दबदबे से हिन्दी का विकास बाधित हुआ है।

सरकारी संस्थानों की उदासीनता, लेखकों और अनुवादकों द्वारा मनमाने शब्दों के प्रयोग तथा अंग्रेजी शब्दावली के प्रयोग से हिन्दी की व्यावसायिक जगत में पकड़ संतोषजनक नहीं कही जा सकती है।

हालांकि पिछले कुछ समय में हिन्दी ने विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में अपनी जड़ें जमाने में सफलता पायी है पर व्यावसायिक शब्दावली के विकास और उसे प्रचलन में

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लाने का काम आधा अधूरा है। कुछ उदाहरणों से हम व्यावसायिक क्षेत्र में प्रचलित हिन्दी को देख सकते हैं।

Bee Keeping → मधुमक्खी पालन

Soil managment → मृदा प्रबंधन

Business communication → व्यवसाय संप्रेषण

इत्यादि।

ये उदाहरण काफी सहज हैं किंतु हम निम्न उदाहरणों में देख सकते हैं कि हिन्दी में अनुवाद न होने के कारण अंग्रेजी शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है। उदा०

बेसिक कम्प्यूटिंग, डेस्क टॉप पब्लिसिंग

वेल्डिंग

प्लानिंग आदि।

समग्र: हिन्दी की व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली

विकास तो हुआ है पर अभी और कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में में अविस्मरणीय योगदान रहा।

महाराष्ट्र में सर्वप्रथम 'तिलक' ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित प्रसारित किया और 'हिन्दी केसरी' नामक पत्र निकाला। इसी क्रम में मदनमोहन मालवीय जी ने हिन्दी प्रचार समितियों की स्थापना और नेतृत्व किया।

सावरकर बंधुओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा मानकर उसका पक्ष लिया। महाराष्ट्र के लोगों में हिन्दी के प्रति सहानुभूति निर्मित करने में 'मराठी साहित्य परिषद' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बर्नर्ड चर्च कॉलेज के प्राचार्य त्रिवेदी ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का पक्ष लिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महात्मा गांधी का योगदान हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय है। उन्होंने 'हिन्दी समिति वर्धा' की स्थापना में सहयोग किया और उन्हीं की प्रेरणा से महाराष्ट्र के तमाम स्कूलों में हिन्दी के पठन पाठन का कार्य प्रारंभ हुआ।

महाराष्ट्र के काठियावाड़ क्षेत्र में 'सरदार वल्लभ भाई पटेल' सक्रिय थे उन्होंने 'काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' का गठन किया और हिन्दी के प्रति लोगों में प्रेम और एकजुटता का निर्माण किया।

विभिन्न कांग्रेसी नेताओं ने भी महाराष्ट्र में अपने-अपने स्तर पर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रचारित-प्रसारित किया।

समग्रतः महाराष्ट्र का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में अति महत्त्वपूर्ण स्थान है।

Good

9/15